भारतीय उदारवादी के रूप में गोपाल कृष्ण गोखले

डॉ0 देवी प्रसाद श्रीवास्तव
पी0डी0एफ0, जे0एन0वी0 यूनिवर्सिटी,जोधपुर

सारांश

भारतीय उदारवादियों की श्रृंखला में गोपाल कृष्ण गोखले अपने युग के चमकते हुए सितारे थे जिन्होंने भारत के राजनीति, आर्थिक और सामाजिक सभी क्षेत्रों में अपने चिन्तन और कार्यकलापों का प्रसार किया, सभी क्षेत्रों में नैतिकता के स्पर्श की कामना की, आदान–प्रदान और समझौते के मार्ग का समर्थन किया, वैधानिक आन्दोलन को गति दी तथा आदर्शवादी मार्गो के समन्वय के साथ–साथ राजनीति में नैतिक मूल्यों को स्थान दिया व सदैव क्रमिक सुधारों का पक्ष लिया और भारत के लिए एकाएक स्वशासन की मांग को अव्यवहारिक माना। जो ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों की न्याय और उदारता की भावना को उकसा कर उन्हें भारत को अपने साम्राज्य के भीतर ही स्वशासन देने को तैयार करना चाहते थे। गोपाल कृष्ण गोखलें का ब्रिटिश शासन में मुख्यतः दो कारणों से गहरा विश्वास था– प्रथम ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता का विचार एवं द्वितीय – ब्रिटिश शासन की लोकतांत्रिक संस्थाओं तथा शिक्षण पद्धति के प्रति आकर्षण। चिन्तन का यह विश्वास गोपाल कृष्ण गोखले में मुखरित हुआ। मानव स्वभाव की अच्छाई में विश्वास रखने वाले गोखले की धारणा थी कि अन्ततः एक नवीन अंग्रेज राजनीतिज्ञता का उदय होगा जो भारत के साथ न्याय करेगी। गोखले पश्चिम की पूँजीवादी अर्थनीति और अविकसित अथवा पिछड़े देशों की सामाजिक–आर्थिक माँगों के द्वारा उत्पन्न खतरों को भली भाँति समझते थे अतः उनका स्पष्ट मत था कि पूँजीवादी देशों की अर्थनीति ज्यों कि त्यों भारत में लागू नहीं की जानी चाहिए।

मुख्य बिन्दु– *1.गोपालकृष्ण गोखलें का ब्रिटिश के प्रति गहरा विश्वास था। 2.गोपाल कृष्ण गोखले भारत के लिए ब्रिटिश शासन के कल्याणकारी स्वरूप में विश्वास करते थे। 3.गोपाल कृष्ण गोखले भारत के लिए स्वशासन ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत चाहते थे। 4.गोखले का आर्थिक चिन्तन।*

शोधपत्र का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

डॉ0 देवी प्रसाद श्रीवास्तव, “*भारतीय उदारवादी के रूप में गोपाल कृष्ण गोखले* ”, RJPP 2017, Vol. 15, No.2, pp. 162-167

http://anubooks.com/?page_id=2004
Article No. 23(RP 572)

प्रस्तावना

भारतीय उदारवादियों की श्रृंखला में गोपाल कृष्ण गोखले अपने युग के चमकते हुए सितारे थे जिन्होंने भारत के राजनीति, आर्थिक और सामाजिक सभी क्षेत्रों में अपने चिन्तन और कार्यकलापों का प्रसार किया, सभी क्षेत्रों में नैतिकता के स्पर्श की कामना की, आदान–प्रदान और समझौते के मार्ग का समर्थन किया, वैधानिक आन्दोलन को गति दी तथा आदर्षवादी मार्गों के समन्वय के साथ–साथ राजनीति में नैतिक मूल्यों को स्थान दिया व सदैव क्रमिक सुधारों का पक्ष लिया और भारत के लिए एकाएक स्वषासन की मांग को अव्यवहारिक माना। व ''अंग्रेजों की न्याय–प्रियता और समुचित आचरणषीलता के प्रति उनकी अपनी निष्ठा इतनी अधिक थी कि वे यह मानने के लिए तैयार न थे कि भारत में अंग्रेज अधिकारियों को सुधार सकना सम्भव नहीं है।'' ब्रिटेन के साथ भारत के सम्बन्धों को वे हितकारी मानते थे और अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए सांविधानिक संघर्श के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय उन्हें रूचिकर न था। क्रान्ति या विपल्व के विचारों से वे कोसों दूर थे। सार्वजनिक जीवन का वे आध्यात्मीकरण करना चाहते थे।

गोपालकृष्ण गोखलें का ब्रिटिश शासन में मुख्यतः दो कारणों से गहरा विश्वास था– प्रथम ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता का विचार एवं द्वितीय – ब्रिटिश शासन की लोकतांत्रिक संस्थाओं तथा शिक्षण पद्धति के प्रति आकर्षण। उदारवादी चिन्तन का यह विश्वास गोपाल कृष्ण गोखले में मुखरित हुआ। मानव स्वभाव की अच्छाई में विश्वास रखने वाले गोखले की धारणा थी कि अन्ततः एक नवीन अंग्रेज राजनीतिज्ञता का उदय होगा जो भारत के साथ न्याय करेगी। पूनाकॉग्रेंस–अधिवेशन में उन्होंने कहा– ''अच्छे व बुरे के लिए हमारा भविष्य और हमारी आकांक्षाए ब्रिटेन के साथ जुड़ गई है और कॉग्रेस उन्मुक्त रूप से यह स्वीकार करती है कि हम जिस प्रगति की आंकाक्षा करते है वह ब्रिटिश शासन की सीमाओं में ही है।'' 1902 मे अपने एक बजट भाषण में गोखले ने यह विचार व्यक्त किया की – ''आवश्यकता कि चाहे हमारी सरकार विदेशी कार्यकर्ताओं की है, लेकिन इसकी भावना राष्ट्रीय है और यह भारतीय की भलाई के समक्ष अन्य बातों को गौण स्थान देती है तथा भारतीयों के प्रति किये गये असम्मान जनक व्यवहार को ऐसा समझती है कि मानों यह व्यवहार अंग्रेजों के साथ किया गया हो।

गोपाल कृष्ण गोखले व्यवहारिक राजनीति बुद्धि के धनी थे। जो ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों की न्याय और उदारता की भावना को उकसा कर उन्हें भारत को अपने साम्राज्य के भीतर ही स्वशासन देने को तैयार करना चाहते थे। उनका विचार था कि उग्रवादी साधनों से भारत का अहित ही होगा, आवश्यकता तो यह है कि उदारवादी अंग्रेंजों के साथ उदारवादी भावना से काम किया जाय। ''वे कहा करते थे कि इस मनोवैज्ञानिक विधि से कार्य करके ही ऐसी स्थितियों उत्पन्न की जा सकती है कि अंग्रेज तथा भारतवासी दोनों अपने हितों को एक रूप समझने लगे हैं।'' जब लार्ड हार्डिग ने वार्तालाप के मध्य गोखले से पूछा की – ''तुम्हें कैसे लगेगा, कि यदि तुम्हें मैं यह कहूँ कि एक माह में ही सभी ब्रिटिश अधिकारी और सेना भारत छोड़ देंगे'' तो उनका मनोवैज्ञानिक प्रत्युत्तर था– ''मैं इन समाचार को सुनकर प्रसन्नता अनुभव करूंगा, लेकिन इससे पूर्व की आप लोग लंदन पहुचेंगे हम आप लोगों को वापस आने के लिए तार कर देगें।''

गोपाल कृष्ण गोखले भारत के लिए ब्रिटिश शासन के कल्याणकारी स्वरूप में विश्वास करते थे। उनका यह मानना था कि ब्रिटेन के साथ सम्पर्क बनाये रखने से भारतीयों की बौद्धिक प्रतिभा चमकेगी दृष्टिकोण विकसित होगा और भारत की निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। गोखले ने भारत के विश्व राष्ट्रों के समुदाय के बीच एक सम्मानित स्थान प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश सहायता और सम्पर्क अपेक्षित था। गोखले इस बात के लिए आभार व्यक्त करते थे कि अशान्त और अराजक भारत में अंग्रेजों ने आकर शान्ति स्थापित की। वे कहते थे– ''भारत में किसी भी समय अव्यवस्था उत्पन्न करना कोई कठिन काम नहीं हैं। ऐसा तो यहाँ शताब्दियों तक रहा है– परन्तु इस एक शताब्दी के समय में अंग्रेजों ने यहाँ जो शान्ति और व्यवस्था कायम की है, उसका कोई विकल्प खोज़ा लेना सुगम नहीं है।'' 1903 के अपने बजट भाषण में उन्होंने कहा था कि भावी भारत दरिद्रता और असन्तोष का भारत नहीं होगा उद्योगों, जाग्रत शक्तियों और सम्पन्नता का भारत होगा, लेकिन इसके लिए आवश्यक परिस्थितियों ब्रिटिश क्राउन की नियंत्रण सत्ता के अधीन ही प्राप्त की जा सकेगी। उनका मानना था कि भारत को शन्ति और सुव्यवस्था ब्रिटिष राज्य की बदौलत ही प्राप्त थी। गोखले ब्रिटिश सम्पर्क को भारत के लिए वरदान स्वरूप मानते थे क्योंकि उसी के कारण ही भारत में पाश्चात्य शिक्षा का प्रवेश हुआ था। वे पाश्चात्य शिक्षा को भारत के मुक्तिदायनी शक्ति में रूप में देखते थे और भारत में इसके अधिक विस्तार के पक्षधर थे। इन सबके साथ ही गोखले ने ब्रिटिश शासकों के साम्राज्यवादी रवैए की आलोचना भी की। गोपाल कृष्ण गोखले ने देशवासियों के नैतिक, बौद्धिक और शारीरिक योग्यताओं के विकास पर पूरा बल दिया। वे राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रवाद का संदेश दिया। गोखले ने राजनीति का आध्यत्मीकरण भी किया उनके द्वारा स्थापित 'सर्वेष्ट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी' की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राजनीति और धर्म का समन्वय करना था।

गोपाल कृष्ण गोखले भारत के लिए स्वशासन ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत चाहते थे। ब्रिटिश शासन उनकी दृष्टि में एक ईश्वरीय देन थी, अतः उससे पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद भारतीयों के लिए अहितकर होगा। गोखले का विश्वास था कि ब्रिटिश नौकरशाही के फलस्वरूप प्रषासन में जो आर्थिक और अन्य दोष प्रवेश कर गए थे, उनका निराकरण स्वशासन द्वारा ही हो सकता था। स्वशासन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था– ''ब्रिटिश अभिकरण के स्थान पर भारतीय अधिकरण को प्रतिष्ठित करना, विधान परिशदों का विस्तार और सुधार करते–करते उन्हें वास्तविक निकाय बना देना और जनता को सामान्यतः अपने मामलों का प्रबन्ध स्वयं करने देना।'' 1905 में बनारस काँग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में गोलखे ने कहा– ''कॉग्रेंस का लक्ष्य यह है कि भारत भारतीयों के हितों को ध्यान में रखते हुए प्रशासित होना चाहिए। एक निश्चित समयाविधि में भारत में ऐसी ही सरकार गठित हो जानी चाहिए जैसी कि ब्रिटिश साम्राज्य की अन्य स्वशासित उपनिवेशों की सरकार है।'' गोखले ने स्वशासन को एक भावात्मक आवश्यकता और नैतिक तथा राजनीतिक उपलब्धि माना। 1907 में इलाहाबाद में दिए गए अपने एक भाषण में उन्होंने कहा– ''मेरी आकांक्षा है कि मेरे देशवासियों की स्थिति अपने देश में वैसी ही हो जैसी कि अन्य लोगों को अपने देश में है। मैं जाति या सम्प्रदाय के भेदभाव से परे प्रत्येक नर–नारी

के पूर्ण विकास का समर्थक हूँ। मैं चाहता हूँ कि उन पर किसी प्रकार के अप्राकृतिक प्रतिबन्ध न लगाए जाए। मैं चाहता हूँ कि भारत विश्व के महान राष्ट्रों में राजनीतिक, औद्योगिक, धार्मिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक और कला के क्षेत्र में अपना उपयुक्त स्थान ग्रहण करें। मेरी आकाँक्षा यही है कि ये सभी आदर्श ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ही प्राप्त हो।'' गोखले मानव प्रकृति के लिए स्वतन्त्रता की अत्यावश्यक मानते थे। लार्ड कर्जन के प्रशासन की उन्होंने आलोचना की थी कि उसने कुशलता के लिए स्वतन्त्रता का बलिदान करने की नीति अपनाई थी। भारत की पराधीनता से उन्हें अत्यन्त कष्ट था। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों से उनका आग्रह था कि वे भारत पर इस तरह शासन करें कि भारतवासी पश्चिम के उच्च आदर्शों के अनुसार स्वयं अपने पर शासन करने योग्य बने सकें। स्वतन्त्रता के लिए गोखले न्यायपालिका और कार्यपालिका की पृथकता के समर्थक थे। उनका कहना था कि दोनों के संयुक्त हो जाने से नागरिकों की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ जाएगी। गोखले को सरकार के अनावश्यक नियन्त्रणों में विश्वास नहीं थ। उन्होंने कर्जन के समय भारतीय विश्वविद्यालय विधेयक का विरोध किया जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालयों पर सरकार के नियन्त्रण को बढ़ाना था। गोखले ने जीवनपर्यन्त सरकार के प्रत्येक दमनकारी प्रतिबन्धक कानून के विरोध में शक्तिशाली आवाज उठाई।

''गोखले का आर्थिक चिन्तन'' गोपालकृष्ण गोखलें इतिहासकार तथा अर्थशास्त्र के आचार्य थे। दादाभाई नौरोजी की भाँति उन्हें भी राजनीति के आर्थिक आधारों के अध्ययन में रूचि थी।'' गोखले के आर्थिक विचार अत्यन्त स्पष्ट थे जो कि तथ्य तथा आँकड़ों को स्पष्टता प्रस्तुत करते थे। इन विचारों से भारत की प्रगति की प्रेरणा प्राप्त होती है। गोखले के आर्थिक विचार निम्नवत् हैं–

1. गोखले ने भारत में गरीबी का कारण तत्कालीन यूरोपीयन सेना का व्यय तथा अधिकारियों का वेतन का भार है। उनका मानना था कि शान्तिकाल में भी ब्रिटिश सैनिकों और अधिकारियों की अधिक नियुक्ति के फलस्वरूप सैन्य खर्च अधिक है जिसका नियुक्ति के फलस्वरूप खर्च अधिक है जिसका भार वहन करने से भारतीयों की आर्थिक स्थिति बदतर हो रही है।

2. उनका मानना कि रेलों के विस्तार से यद्यपि संचार तथा यातायात तथा अकाल आदि के समय अकालग्रस्त क्षेत्रों में भोजनादि पहुँचाने में सुविधा थी परन्तु उनका विस्तार वस्तुतः मानवोचित कारणाों से न किया जाकर व्यावसायिक कारणो से प्रेरित था अर्थात् देश के आन्तरिक यातायात की अपेक्षा दूसरे देषों में कुछ बड़े पैमाने पर अनाज और कच्चा माल भेजने के लिए ही रेलों का अधिक विस्तार हो रहा है। भारत से कच्चामाल का निर्यात तथा अनावश्यक तैयार माल का आयात (जिसमें रेलें सहयोग दे रही थी।) ने स्वदेषी उद्योगों का नाश कर दिया जिससे दस्तकारों तथा छोटे शिल्पकारों को पुनः कृषि कार्य के लिए विवश होना पड़ता है।

3. निर्बन्ध व्यापार की नीति भारत पर लाद दी गई जिससे देश के सभी उद्योगों का नाश कर दिया है। इस नीति का एक अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि लोग फिर खेती के लिए विवश होने के कारण अधिकाधिक गरीब होते जा रहे। वाष्प–चालित तथा अन्य मशीनों की प्रतियोगिता

में भारत के पुराने उद्योग टिक नही पा रहे है और इन्हीं कारणों से देश की प्रगति रूक गई है।

4. विदेशी व्यापारियों को दी जाने वाली अधिकाधिक रियायतों और सुविधाओं के कारण रेलों को घाटा हो रहा है।

5. भारतीय वित्त व्यवस्था में वस्तुतः सैनिक दृष्टिकोण मुख्य है और भारतीय के लिए भौतिक विकास या नैतिक उत्थान की दिशा में तब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सकता जब तक देश के राजस्व का विनियोजन सैनिक कामों के लिए जारी रहेगा। गोखले ने सुझाव दिया कि जब भारत भारत पर वास्तव में हमला नहा या हमलें का भय न पैदा हो जाए, तब तक भारत की सीमाओं के बाहर की जाने वाली सैन्य कार्यवाही के लिए भारत के राजस्व का कम से कम प्रयोग किया जाय।

6. रुपये की मूल्य–वृद्धि के कारण उपभोग वस्तुओं की कीमतें बढ़ रही है और जनता कष्ट में है, अतः सूती वस्त्र पर से उत्पादन शुल्क हटाया जाए, नमक शुल्क कम किया जाए तथा और भी अनावश्यक करों की कमी की जाए या उन्हें हटाया जाए।

7. लोगों के कल्याण–कार्यों का भार प्रान्तों पर है, लेकिन राजस्व का अधिकांश भाग केन्द्रीय सरकार हड़प लेती है। यह स्थिति अनुचित है। ''बढ़ते हुए राजस्व से मिलने वाली पूरी रकम लेने के बदले भारत सरकार को चाहिए कि वह प्रान्तीय सरकारों से बड़े–बड़े निश्चित अंशदान–उदाहरणार्थ– प्रान्तीय सरकारों के राजस्व का एक तिहाई अथवा एक चौथाई भाग ले ले और बाकी दो तिहाई अथवा तीन–चौथाई की पूर्ति बढ़ते हुए संसाधनों से करें।'' ये संसाधन है– सीमा शुल्क, उत्पादन शुल्क और स्टाम्प।

8. प्रान्तों को कराधाने का अधिकार दिए जाने से पूर्व उन पर कुछ विशेष शर्तें लगाई जानी चाहिए, जैसे– प्रान्तीय बजटों पर विचार करने क प्रथा सुनिर्धारित हो, प्रत्येक स्थानीय परिशद् सरकार के रूप में कार्य करें जिसकी अध्यक्षता इग्लैण्ड से आने वाला नया गवर्नर करे और प्रान्तीय परिषदों में अधिक संख्या निर्वाचित सदस्यों की हो। शर्तें पूरी होने पर ही प्रान्तीय परिषदों को कराधान का अधिकार दिया जाए।

9. गोखले ने कृषकों के दीन–हीन और ऋणग्रस्त आर्थिक दशा को चित्रित करते हुए सुझाव दिया कि सरकार किसानों को करों में उचित राहत दे और साथ ही कर वसूली के तरीकों में भी समुचित परिवर्तन करें।

10. गोखले ने कृषि के साथ देश के औद्योगिक विकास पर बल दिया और कहा कि इस क्षेत्र में उपेक्षा वृत्ति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी घातक होगी। उन्होंने देश के उद्योगपतियों से अपील की कि उद्योग में लगे श्रम में अधिकाधिक कुशलता लाने के प्रयत्न किए जाएं, उत्पादन को बढ़ाया जाएं उद्योग धन्धों के लिए उपलब्ध स्रोतों का उपयोग इस प्रकार किया जाएं कि उनका पूरा–पूरा लाभ उठाया जा सकें। उद्योगों में भारत के मध्यवर्गीय शिक्षित व्यक्तियों को प्रोत्साहन दिया जाएं, उत्पादन का बढ़ाया जाएं। उद्योग धन्धों के लिए उपलब्ध स्रोतों का उपयोग इस प्रकार किया जाएं कि उनका पूरा–पूरा लाभ उठाया जा सके। उद्योगों में भारत के मध्यवर्गीय शिक्षित व्यक्तियों को प्रोत्साहन दिया जाएं ताकि एक ओर से बेरोजगारी में राहत मिले

और दूसरी ओर देश के शिक्षित वर्ग का एक नई शिक्षा में प्रशिक्षण हो जिससे औद्योगिकरण के युग के लिए एक नई पीढ़ी तैयार हो सके।

11. गोखले ने आयकर को बढ़ाने वाली सीमा का समर्थन किया। 1907 के अपने बजट भाशण ने उन्होंने स्वर्ण–मुद्रा के प्रारम्भ का विरोध किया, क्योंकि ब्रिटिश सरकार भारतीय मुद्रा के सोने के रूप में ही ग्रहण करती थी जिससे भारतीय आर्थिक हितो को हानि पहुँचती थी। गोखलें ने भारतीय रूपये को ब्रिटिश रुपये में बदलने की बात कहीं।

गोखले पश्चिम की पूँजीवादी अर्थनीति और अविकसित अथवा पिछड़े देशों की सामाजिक–आर्थिक माँगों के द्वारा उत्पन्न खतरों को भली भाँति समझते थे अतः उनका स्पष्ट मत था कि पूँजीवादी देशों की अर्थनीति ज्योंकित्यों भारत में लागू नहीं की जानी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. *टी.वी. पर्वते – गोपाल कृष्ण गोखले*
2. *विश्वनाथ प्रसाद वर्मा – आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन का इतिहास*
3. *त्रयम्बक रघुनाथ देवगिरिकर– गोपाल कृष्ण गोखले*